प्रा.डॉ. श्रीमती शशिप्रभा जैन
एम.ए.(हिन्दी), एम.ए.(समाजशास्त्र),
पीएच.डी.,
महावीर महाविद्यालय,
कोल्हापुर -

प्रमाण-पत्र

मैं यह प्रमाणित करती हूँ कि ` कु. जयश्री विठ्ठल पाटील ` ने मेरे निर्देशन में यह शोध प्रबन्ध एम.फिल. उपाधि के लिए लिखा है । पूर्व योजनानुसार यह कार्य सम्पन्न हुआ है । जो तथ्य इस प्रबन्ध में प्रस्तुत किये गये हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं ।

निर्देशिका
हिन्दी प्राध्यापिका,
महावीर महाविद्यालय,कोल्हापुर ।

स्थल : कोल्हापूर ।
दिनांक :३०:११:१९८९ ।

प्र मा ण प त्र

मैं यह प्रमाणित करती हूँ कि प्रा.डॉ.श्रीमती शशिप्रभा जैन जी के निर्देशन में मैंने यह शोध प्रबन्ध एम.फिल. उपाधि के लिए लिखा है । इस प्रबन्ध में प्रस्तुत की गई सभी बातें मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं ।

स्थल : कोल्हापूर ।
दिनांक :३०:११:१९८९ ।

कु.जयश्री वि.पाटील
JVPatil

••

अनुक्रमणिका

क्रम	विषय	पृष्ठ
१	भूमिका	
२	प्रथम अध्याय - 'समाज का संक्षिप्त परिचय'	1 - 20
	(अ) समाज का स्वरूप, परिभाषाएँ, महत्व	
	(आ) समाज के विभिन्न अंग : समूह समुदाय, संघ, संस्था -	
	१) परिवार संस्था	
	२) धार्मिक संस्था	
	३) आर्थिक संस्था	
	४) समाज और संस्कृति	
	५) विधि संस्कार	
३	द्वितीय अध्याय - 'सुश्री उषा प्रियम्वदाजी का व्यतित्व एवं कृतित्व'	21 - 46
	(अ) सुश्री उषा प्रियम्वदाजी का संक्षिप्त जीवन	
	(आ) सुश्री उषा प्रियम्वदाजी का साहित्यिक परिचय	
	(इ) सुश्री उषा प्रियंवदाजी के कथात्मक साहित्य का संक्षिप्त परिचय	
	उपन्यास --	
	१) 'पचपन खम्भे लाल दीवारें'	
	२) 'रुकोगी नहीं,.. राधिका ?'	
	३) 'शेषायात्रा'	
	कहानी संग्रह --	
	१) जिंदगी और गुलाब के फूल'	
	२) एक कोई दूसरा	
	३) कितना बडा झूठ	

क्रम	विषय	पृष्ठ
४	तृतीय अध्याय - सुश्री उषा प्रियंवदा के कथात्मक साहित्य में प्रतिबिंबित समाज	47 - 129
	क) समाज और व्यक्ति	
	ख) परिवार संस्था	
	ग) विवाह संस्था	
	घ) स्त्री-पुरुष संबंध	
	च) आर्थिक पक्ष	
	छ) धार्मिक पक्ष	
	ज) सांस्कृतिक पक्ष	
	झ) विधि-संस्कार	
५	चतुर्थ अध्याय - सुश्री उषा प्रियंवदाजी के कथात्मक साहित्य में प्रतिबिंबित समाज की समस्यायें	130 - 162
	१) अजनबीपन की समस्या	
	२) सांस्कृतिक समस्या	
	३) विवाह की समस्या	
	४) बेरोजगारी की समस्या	
	५) नौकरीपेशा नारी की समस्या	
	६) नैतिकता की समस्या	
६	पंचम अध्याय उपसंहार	163 - 170
	संदर्भ सूचि --	
	१) आधार ग्रंथ	
	२) संदर्भ ग्रंथ	
	३) पत्रिकायें	
	४) पत्र	

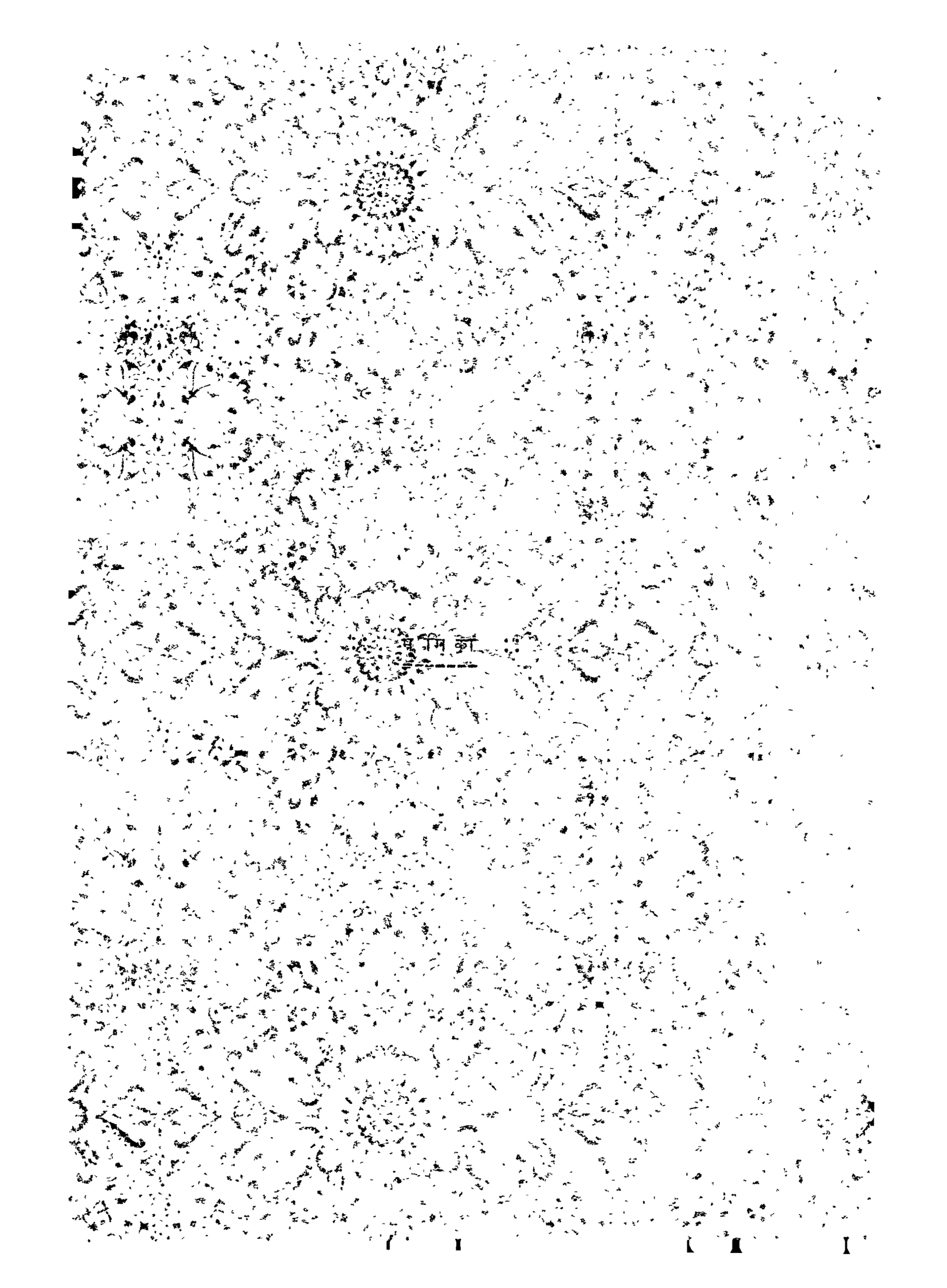

भू मि का

मैं जब बी.ए.में पढ रही थी, उस समय हमारे पाठयक्रम में सुश्री उषा प्रियंवदाजी का 'रुकोगी नहीं,... राधिका ?' उपन्यास था । उस उपन्यास के अध्ययन के पश्चात् कई दिनों तक राधिका मेरे मन-मस्तिष्क में छायी रही और उसके व्यक्तित्व से प्रभावित मेरी चेतना को इस बात का पता भी न चला, कि राधिका के माध्यम से प्रियंवदाजी ने कब मेरे हृदय में स्थान ग्रहण कर लिया है । और जब एम.फिल.के शोध-प्रबन्ध के लिए विषाय निर्वाचन का सवाल उठा तो मन की तह में स्थित उषा प्रियंवदाजी का नाम अचानक ही मन: पटल पर उभर आया । और मैंने निश्चय कर लिया कि उन्हीं के कथात्मक साहित्य के ऊपर कुछ कार्य करूँ । फिर यह सवाल उपस्थित हुआ, कि उनके साहित्य के किस पहलू पर शोध-कार्य आरंभ करूँ । मैं अपने महाविद्यालयीन जीवन में हिन्दी के साथ-साथ समाजशास्त्र की भी छात्रा रही हूँ । दोनों का अध्ययन करते हुए मैंने यह अच्छी तरह से जान लिया था, कि समाज और साहित्य का कापनी घनिष्ठ संबंध है, अथवा यों भी कहा जा सकता है कि साहित्य समाज का दर्पण है जिसमें समाज का प्रतिबिंब समग्रता से देखा जा सकता है । अत: मैंने सोचा कि क्यों न मैं सुश्री उषा प्रियंवदा के कथात्मक साहित्य में प्रतिबिंबित समाज को अपने प्रबन्ध का विषाय बना दूँ । इस विषाय चयन का एक और भी महत्वपूर्ण कारण यह भी है, कि प्रियंवदाजी के समूचे साहित्य को पढने के पश्चात् मुझे यह ज्ञात हुआ कि अमरिका जाने के बाद उन्होंने विशेषत: रूप से विदेश में स्थित प्रवासी भारतीय समाज को अपने कथात्मक साहित्य का विषाय बनाया । यह समाज आम भारतीय समाज से भिन्न रहा है । सुश्री उषाजी स्वयं अमरीका में रह रही हैं । उन्होंने इस समाज को निकटसे देखा ही नहीं, अपितु वह भी अब उस समाज का भाग बन चुकी हैं । यही कारण है, कि उन्होंने इस समाज की उलझनों,अन्तर्विरोधों और समस्याओं को यथार्थ के धरातल पर चित्रित किया है । उनके साहित्य में चित्रित

समाज के इस अनोखेपन ने मुझे इस विषय के प्रति और अधिक आकर्षित किया । फिर मैं इस निर्णय पर दृढ हो गयी, कि मैं ऊषा प्रियंवदा के कथात्मक साहित्य में प्रतिबिंबित समाज विषय को ही अपने शोध-प्रबन्ध का विषय बना दूँगी । जब यह बात मैंने मेरी शोध निर्देशिका डा.सुश्री शशिप्रभा जैनजी को बतायी, तब उन्होंने भी इस विषय को सहर्ष स्वीकृति दे दी । सौभाग्य की बात यह है, कि स्वयं जैनजी भी अपने महाविद्यालयीन जीवन में समाजशास्त्र की छात्रा रही थीं,यही कारण है, कि उन्होंने इस विषय में मुझे काफी अच्छा मार्गदर्शन दिया । अत: मैं यह विश्वास के साथ कहती हूँ कि उन्हीं के पथ निर्देशन की उजली किरण के प्रकाश से मैं इस अनुसंधान के गहन सुरंग की यात्रा पूरी कर सकी ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध का विस्तार से अध्ययन करते समय सुविधा की दृष्टि से इसे पाँच अध्यायों में विभाजित किया है ।

प्रथम अध्याय में समाज का अर्थ, परिभाषा तथा स्वरूप का समाजशास्त्र के आधारपर विवेचन किया है । इसके अंतर्गत समाज की महत्वपूर्ण इकाइयाँ - व्यक्ति, परिवार,आर्थिक पक्ष,धार्मिक पक्ष, सांस्कृतिक पक्ष,विधि-संस्कार आदि की विवेचना करने का तथा समाज में उनकी महत्ता को समझाने का प्रयास किया है ।

द्वितीय अध्याय में सुश्री ऊषा प्रियंवदाजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षिप्त परिचय दिया गया है । इसमें ऊषा प्रियंवदाजी साहित्य सृजन के मार्ग पर किसप्रकार अग्रेसर हुई,इसका विस्तार से उल्लेख तो किया ही है, साथ ही साथ उनके कथात्मक साहित्य का भी संक्षिप्त परिचय दिया है ।

तृतीय अध्याय में ऊषा प्रियंवदाजी के कथात्मक साहित्य में प्रतिबिंबित समाज के विभिन्न पक्षों की विस्तारपूर्वक चर्चा की है । जिसके अंतर्गत आज की परिवर्तित परिस्थितियों के संदर्भ में व्यक्ति और समाज के संबंध, समाज के अन्य महत्वपूर्ण पक्ष-परिवार, विवाह, स्त्री-पुरुष संबंध, आर्थिक संस्था, धार्मिक संस्था, सांस्कृतिक पक्ष तथा विधि संस्कार आदि को विस्तारपूर्वक प्रस्तुत किया है ।

चतुर्थ अध्याय में ' ऊषा प्रियंवदाजी के कथात्मक साहित्य में प्रतिबिंबित समाज ' की आधुनिक समस्याओं को लिया है । जिसमें विशेष रूप से - अजनबीपन की समस्या, सांस्कृतिक समस्या, विवाह की समस्या, नौकरीपेशा नारी की समस्या, बेरोजगारी की समस्या तथा नैतिकता की समस्या आदि है ।

पंचम अध्याय उपसंहार का है । जो समूचे शोध-प्रबन्ध का निचोड है ।

कोल्हापुर के महावीर महाविद्यालय के हिन्दी विभाग की एम. फिल.की छात्रा होने के नाते प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध को पेश करते हुए मुझे अत्याधिक खुशी हो रही है । इसका संपूर्ण श्रेय मैं सर्वप्रथम मेरे गुरु डा. सुश्री शशिप्रभा जैनजी को देती हूँ । मेरे जैसे अभावों और परेशानियों से घिरे शोधार्थी को बार-बार उत्साह और सलाह देकर उन्होंने इस कार्य को पूर्णता की ओर बढा दिया । उनसे प्राप्त स्नेह और मार्गदर्शन के प्रति मैं सदैव उनकी ऋणी रहूँगी ।

साथ ही महावीर महाविद्यालय के प्राचार्य डा.बी.बी.पाटील तथा प्रा.डा.सुनिलकुमार लवटेजी मुझे इस कार्य में निरंतर प्रेरणा और सहायता देते रहे । अत: उनके प्रति भी मैं आभारी हूँ ।

मेरे परमपूज्य माता-पिता जिनके आशिर्वाद बिना मेरे लिए कोई भी कार्य संभव नहीं । उनके शुभाशिष से ही मैं यह कार्य पूरा कर सकी । मैं भविष्य में भी उनके आशिर्वाद की कामना करती हूँ ।

इन सबके अतिरिक्त मैं उन सभी लेखकों,महानुभावों की आभारी हूँ, जिन्होंने मेरे पत्रों के उत्तर देकर मेरी आशंकाओं का समाधान किया है । मैं उन मित्रों की भी ऋणी हूँ, जिनसे मुझे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहायता और प्रोत्साहन मिला ।

अंत में मैं टंकलेखक श्री बालकृष्ण रा. सावंत ,कोल्हापुर तथा मेरे हितैषी श्री सुरेश शिप्पूरकर जी के प्रति भी आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने इस शोध-प्रबन्ध को अंतिम रूप देने में मेरी सहायता की ।

स्थल : कोल्हापूर ।

दिनांक :३०:११: १९८९ ।

कु.जयश्री वि.पाटील

[signature]